Crop Weather Watch Group Advisory

U.P. Council of Agricultural Research, Lucknow

फसल मौसम सतर्कता समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की बाईसवीं बैठक की संस्तुतियॉं

दिनॉक : **04 जनवरी, 2012**
समय : **11.00 बजे**
स्थान : **उपकार सभाकक्ष**

क्राप वेदर वाच ग्रुप की वर्ष 2011–12 की बाईसवीं बैठक श्री प्रद्युम्न त्रिपाठी, सचिव, उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनॉक 04 जनवरी, 2012 को उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में न0 दे0 कृषि एवं प्रौ0 वि0वि0, कुमारगंज, फैजाबाद, च0शे0आ0 कृषि प्रौ0 वि0वि0, कानपुर के फसल एवं मौसम वैज्ञानिक, कृषि विभाग, मत्स्य विभाग, गन्ना विभाग, पशुपालन विभाग रिमोट सेसिंग अप्लीकेशन सेन्टर, लखनऊ तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान एवं उपग्रह से प्राप्त चित्रों के विश्लेषण के अनुसार इस सप्ताह (दिनॉक 04 जनवरी से 10 जनवरी, 2012 तक) प्रदेश के सभी अंचलों में सप्ताह के प्रथम 4 दिनों तक आकाश साफ रहेगा किन्तु सप्ताह के शेष 3 दिनों में प्रदेश के पूर्वी क्षेत्रों में मध्यम एवं प्रदेश शेष क्षेत्रों में यथा बुन्देलखण्ड, पश्चिमाचंल एवं मध्य मैदानी क्षेत्रों में हल्के से मध्यम बादल छाये रहने की संभावना रहेगी किन्तु वर्षा की कोई संभावना नहीं है। प्रदेश के सभी अंचलों में इस सप्ताह मुख्यतया उत्तरी पूर्वी/दक्षिणी पूर्वी हवायें सामान्य (1–2 किमी0/घण्टा) अथवा थोड़ी अधिक गति (3–4 किमी0/घण्टा) से चलने के आसार है। वातावरण में सापेक्षिक आद्रता पूर्वी अंचलों, मध्यांचल तथा बुन्देलखण्ड क्षेत्र में 42–90 प्रतिशत रहने के आसार है जिसके कारण कोहरा/धुंध छाये रहने एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सापेक्षिक आद्रता का प्रतिशत 44–71 रहने से हल्के से मध्यम कोहरा बने रहने के आसार है। प्रदेश के सभी अंचलों में अधिकतम तापमान 21–24 डिग्री0 सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान पश्चिमांचल को छोड़कर 11–13 डिग्री0 सेल्सियस के मध्य रहने के आसार है जो सामान्य से क्रमश: 2 एवं 3 डिग्री अधिक है। पश्चिमांचल में उत्तरी पश्चिमी क्षेत्रों से बर्फीली हवाओं के आने के कारण न्यूनतम तापमान सामान्य से 1–2 डिग्री0 सेल्सियस कम रहने की संभावना है। कुल मिलाकर इस सप्ताह प्रदेश में वातावरण अर्धशुष्क एवं आद्र रहेगा।

कृषि विभाग उ0 प्र0 से प्राप्त ऑकड़ों के अनुसार दिनांक 31.12.2011 तक प्रदेथ में रबी फसलों का कुल आच्छादन लक्ष्य 125.67 लाख हे0 के सापेक्ष 121.86 लाख हे0 (96.97 प्रतिथत) हुआ है, जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में 126.15 लाख हे0 अर्थात 100.09 प्रतिथत आच्छादन हुआ था। इस वर्ष प्रदेथ में गेहूॅ का आच्छादन लक्ष्य 95.00 लाख हे0 है जिसके सापेक्ष अभी तक 90.74 लाख हे0 में बुआई हुई है। तिलहनी फसलों में तोरिया की बुआई इस अवधि तक 4.25 लाख हे0 लक्ष्य के सापेक्ष 3.89 लाख हे0 मे हुई है जो लक्ष्य का 91.85 प्रतिथत है तथा सरसों की बुआई 5.66 लाख हे0 लक्ष्य के सापेक्ष 6.63 लाख हे0 में हुई है जो लक्ष्य का 117.16 प्रतिथत है। दलहनी फसलों में चने की बुआई लक्ष्य 8.40 लाख हे0 के सापेक्ष 8.33 लाख हे0 हो चुकी है, जो लक्ष्य का 99.107 प्रतिथत है। मटर एवं मसूर

की बुआई लक्ष्य के सापेक्ष क्रमथः 116.65 एवं 92.0 प्रतिथत हो चुकी है।

प्रदेश में मौसम के इस परिप्रेक्ष्य में किसानों को निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:–

गेहूँ की खेती

- प्रदेश के उन अंचलों में जहॉ पर्याप्त वर्षा हुई है, सिंचाई लम्बित रखें तथा जहॉ वर्षा नहीं हुई है वहॉ आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- जिन किसान भाईयों ने टापड्रेसिंग अभी तक नही की है वो पर्याप्त नमी की दशा में नाइट्रोजन की शेष मात्रा की टापड्रेसिंग अपरान्ह में करें।
- गेहूँ की बुआई के 20–30 दिन के आस–पास पौधों में जिंक की कमी के लक्षण प्रकट होते है अर्थात पौधे पीले दिखाई देने पर 5 किग्रा0 जिंक सल्फेट तथा 16 कि0 ग्रा0 यूरिया को 800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से छिड़के। जिन क्षेत्रों में यूरिया की टापड्रेसिंग हो चुकी हो वहॉ यूरिया के स्थान पर 2.5 कि0 ग्रा0 बुझे हुये चूने के पानी (2.5 कि0 ग्रा0 चूने को 10 लीटर पानी में सायंकाल भिगोकर दूसरे दिन पानी निथार कर पानी) का प्रयोग करें।
- दिसम्बर में बोये गये गेहूँ जो लगभग 30 दिन का हो गया है यदि खरपतवार निकाई–गुड़ाई से नियंत्रित न हो रहे हो तो चौड़ी पत्ती वाले खपतवारों जैसे बथुआ, सत्यानाथी, हिरन खुरी, कृष्णनील गजरी, प्याजी के नियंत्रण हेतु 2,4 डी सोडियम साल्ट, 80 प्रतिशत टेक्निकल की 625 ग्रा0/हे0 की या मेटा सल्फ्यूरान मिथाइल 20 प्रतिशत डब्लू पी0 की 20 ग्रा0/हे0 तथा सकरी पत्ती जैसे गेहूँसा व जंगली जई के नियंत्रण हेतु आइसोप्रोट्यूरान 75 प्रतिशत डब्लू0पी0 1.25 किग्रा0/हे0 या सल्फोसल्फ्यूरान 75 प्रतिथत डब्लू0पी0 की 33 ग्रा0/हे0 मात्रा 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर चपटे नॉजिल वाले स्पेयर से बुआई से 25–30 दिन पर छिड़काव करें।
- सकरी एवं चौड़ी पत्ती दोनो प्रकार के खरपतवारों के एक साथ नियंत्रण हेतु सल्फोसल्फ्यूरान 75 प्रतिशत डब्लू0पी0 की 33 ग्रा0/हे0 या मेट्रीब्यूजिन 70 प्रतिशत डब्लू0पी0 की 250 ग्रा0/हे0 बुआई के 20–25 दिन बाद लगभग 500–600 ली0 पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- आद्रता अधिक होने के कारण गेरूई तथा पत्ती धब्बा रोग की संभावना है अतः लक्षण दिखाई देने पर नियंत्रण हेतु थायोफिनेट मिथाइल 70 प्रतिशत डब्लू0पी0 की 700 ग्रा0 अथवा जीरम 80 प्रतिशत डब्लू0पी0 की 2.0 किग्रा0 अथवा मैकोजेब 75 डब्लू0पी0 की 2.0 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से लगभग 750 ली0 पानी में घोलकर छिड़काव करें।

दलहनी फसलों की खेती

चना की खेती

- उकठा का प्रकोप दिखाई देने पर ग्रसित पौधों को उखाड़कर जला दें।

मसूर की खेती

- बुकनी रोग के नियंत्रण हेतु घुलनथील गन्धक 80 प्रतिशत 2 किग्रा0 अथवा ट्राइडेमार्फ 80 प्रतिशत ई0सी0 500 मिली0 प्रति हे0 लगभग 500–600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

मटर की खेती

- अल्टरनेरिया पत्ती धब्बा एवं तुलासिता रोग के नियंत्रण हेतु मैंकोजेब 75 डब्लू0पी0 की 2 किग्रा0 अथवा जिनेब 75 प्रतिशत डब्लू0पी0 की 2 किग्रा0 अथवा कॉपर आक्सीक्लोराइड 50 प्रतिशत डब्लू0पी0 की 3 किग्रा0 मात्रा प्रति हे0 लगभग 500–600 ली0 पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।
- बुकनी रोग के नियंत्रण हेतु घुलनथील गन्धक 80 प्रतिशत 2 किग्रा0 अथवा ट्राइडेमार्फ 80 प्रतिशत ई0सी0 500 मिली0 प्रति हे0 लगभग 500–600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- फली बेधक कीट एवं सेमीलूपर कीट का प्रकोप होने पर नियंत्रण हेतु बैसिलस थूरिनजिएन्सिस (बी0टी0) की कर्स्टकी प्रजाति 1.0 किग्रा0 अथवा फेनवैलरेट 20 प्रतिशत ई0सी0 1 ली0 अथवा मोनोक्रोटोफास 36 प्रतिशत एस0एल0 1 ली0 जैविक/रासायनिक कीटनाशको का बुरकाव अथवा 500–600 ली0 में पानी में घोलकर प्रति हे0 छिड़काव करना चाहिए।

अरहर की खेती

- पत्ती लपेटक कीट की रोकथाम हेतु मोनोक्रोटोफॉस 36 ई.सी. 800 मि0 ली0 प्रति हे0 की दर से घोल तैयारकर छिड़काव करें।
- अरहर की फली मक्खी के नियंत्रण हेतु फूल आने के बाद मोनोक्रोटोफॉस 36 ई.सी. अथवा डाइमेथोएट 30 ई.सी. एक लीटर प्रति हे0 की दर से प्रभावित फसल पर छिड़काव करें।

तिलहनी फसलों की खेती

राई/सरसों की खेती

- माहू का प्रकोप होने पर डाइमिथोएट 30 ई.सी. 01 ली0 या मोनोक्रोटोफॉस 01 ली0 प्रति हे0 की दर से छिड़काव करें।
- सरसों के नाथीजीवों के प्राकृतिक शत्रुओं जैसे इन्द्रगोप भृंग, क्राइसोपा, सिरीफेड आदि का फसल वातावरण में संरक्षण करना चाहिए। नाथीजीवों व उनके प्राकृतिक शत्रुओं की संख्या 2:1 का अनुपात होना चाहिए। यदि नाथीजीवों की संख्या प्राकृतिक शत्रुओं से अधिक है तो डाइमिथोएट 30 ई0सी0 1 लीटर या मोनोक्रोटोफास 36 एस0एल0 1.00 लीटर प्रति हे0 की दर से छिड़काव करें।
- अल्टरनेरिया पत्ती धब्बा, सफेद गेरूई एवं तुलासिता रोग के नियंत्रण हेतु मैंकोजेब 75 डब्लू0पी0 की 2.0 किग्रा0 अथवा जिनेब 75 प्रतिशत डब्लू0पी0 की 2.0 किग्रा0 अथवा जीरम 80 प्रतिशत डब्लू0पी0 की 2.0 किग्रा0 मात्रा प्रति हे0 लगभग 600–750 ली0 पानी में घोलकर पर्णीय छिड़काव करें।

बोरो धान की खेती

- पौध को ठंड से बचाने के लिये यथासम्भव पौध की सिंचाई/राख का सप्ताह में दो बार

बुरकाव/पत्तियों पर एकत्र ओस को गिराना/सायंकाल प्लास्टिक सीट से ढ़कना तथा प्रातः काल हटा देना लाभप्रद होगा इससे पौध कम मरेगी। कुछ सीमा तक खेत में धुऑं करके भी ठंड के प्रभाव को कम किया जा सकता है।

- रोपाई हेतु खेत की तैयारी तथा अन्य निवेश जैसे–खाद इत्यादि की व्यवस्था सुनिश्चित करें तथा अनुकूल तापक्रम (13 से 14 डिग्री सेंटीग्रेट) होने पर रोपाई प्रारम्भ की जा सकती है।

जायद फसलों की खेती

- जायद मौसम में बोई जाने वाली फसलों के कृषि निवेशों यथा खाद, बीज एवं कीटनाशी आदि की उपलब्धता समय से सुनिश्चित करने हेतु संबंधित संस्थाओं एवं कृषकों को सलाह दी जाती है।

गन्ना की खेती

- शरदकालीन गन्ने के साथ विभिन्न अन्तः फसलों में आवश्यकतानुसार गुड़ाई, उर्वरक प्रयोग करें।
- बसन्तकालीन बुआई से पूर्व मृदा परीक्षण कराये तथा खादीय संस्तुति के अनुसार संतुलित उर्वरक की व्यवस्था करें एवं उनका बुआई के समय उपयोग सुनिश्चित करें। यदि मृदा परीक्षण न कराया गया हो तो 50 कि0 ग्रा0 नत्रजन, 60 कि0 ग्रा0 फास्फोरस, 20 कि0 ग्रा0 पोटाथ व 25 कि0 ग्रा0 जिंक सल्फेट का प्रयोग करें।
- बुआई हेतु गन्ना बीज की व्यवस्था करें। कुल बावग क्षेत्रफल का 1/3 भाग शीघ्र पकने वाली प्रजातियों के अर्न्तगत रखें। स्वीकृत प्रजातियों का चुनाव करें। बीज गन्ना में पानी की मात्रा पर्याप्त बनाये रखने हेतु काटने से पूर्व उसमें पानी लगायें। तीन–तीन ऑखो का टुकड़ा काटकर पारायुक्त रसायन से उपचारित करें।
- बसन्त कालीन गन्ने की बुआई का उपयुक्त समय पूर्वी उ0 प्र0 में मध्य जनवरी से फरवरी, मध्य क्षेत्र के मध्य फरवरी से मध्य मार्च तथा पश्चिमी क्षेत्र में मध्य फरवरी से मार्च है। अतः पूर्वी उ0 प्र0 के किसान लाही आदि के खाली खेत में कार्बनिक खादों का प्रयोग करते हुये खेत की तैयारी करें।
- बुआई के समय दीमक व अंकुरबेधक नियन्त्रण हेतु फोरेट 10 जी0–25 किग्रा0 या सेबिडाल 4.4 जी–25 किग्रा0 या क्लोरपाइरीफास 20 ई0 सी0 5 ली0/हे0 1875 लीटर पानी के साथ घोल बनाकर प्रयोग करें ।

सब्जियॉं की खेती

- टमाटर तथा बैंगन के बसंत व गीष्मकालीन फसल की रोपाई 15 जनवरी से करने के लिए खेत की तैयारी करें।
- टमाटर तथा मिर्च में पछेती झुलसा से बचाव हेतु मैंकोजेब 2.0 ग्रा0/ली0 पानी में तथा माहू से बचाव के लिए डाईमेथोएट 1.0 मिली0/ली0 पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- आलू में माहू का कुप्रभाव दिखाई पड़ने पर प्रति हे0 1.0 लीटर रोगोर/मेटासिस्टॉक या डाइमिथोएट 30 ई.सी. या मिथाइल डमेटॉन 25 ई.सी. को 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

- पिछले सप्ताह में वारिश होने के कारण आद्रता बनी रहेगी जो कि पछेती झुलसा के लिए अनुकूल है अतः पछेता झुलसा रोग पर नियंत्रण पाने के लिये मैंकोजेब प्रति हे0 2 किग्रा0 मात्रा का छिड़काव करें।

बागवानी

- गुजिया (मिली बग) के उपचार के लिये आम के तने के चारों ओर गहरी जुताई करें। तने पर 400 गेज की पालीथीन की 25 सेमी0 चौड़ी पट्टी बॉधे और पट्टी के ऊपरी तथा निचले किनारों को सुतली से बॉधकर निचले सिरे पर ग्रीस लगाकर सील कर दें। 2 प्रतिथत मिथाइल पैराथियान चूर्ण (200 ग्राम/पेड़) तने के चारों ओर बुरक दें। यदि कीट पेड़ पर चढ़ गये हो तो 0.04 प्रतिथत मोनोक्रोटोफॉस (1 मिली0/लीटर पानी) या डाइमेथोएट 0.06 प्रतिथत (02 मिली0/ली0 पानी) का छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करें।
- आम में गुम्मा विकार (माल फारमेथन) से बचाव के लिये बागों में बौर तोड़ दें।
- पेड़ पर स्थित जालों वाले गुच्छों को तोड कर जला दें एवं गहरी जुताई करें।
- आम में बौर निकलने के समय मिज का प्रकोप दिखाई देते ही फेनिट्रोथियान 1.0 मिली0/ली0 या डाईमेथोएट 1.5 मिली0/ली0 पानी में घोलकर छिड़काव करें। यह छिड़काव गुजिया कीट नियंत्रण में भी प्रभावी होगा।
- आम में तना छेदक कीट का प्रकोप होने की दशा में उसके द्वारा बनाये गये छेदों में डाइक्लोरोवास में रूई भिगाकर भर दें तथा छेदों को गिली मिट्टी से बन्द कर दें।
- केले में माहू का प्रकोप दिखाई पड़ने पर मोनोक्रोटोफॉस 1.25 मिली0/ली0 पानी का छिड़काव करें।
- नीबू के पेड़ों की कटाई–छटाई कर कटे स्थान पर कापर आक्सीक्लोराइड (ब्लू कॉपर) का पेस्ट प्रयोग करें। थालों की निराई–गुड़ाई एवं सफाई करें।

पशुपालन

- पशुओं को ठंड से बचाने के लिए सुबह – शाम पशुओं पर झूल डाले तथा रात में पशुओं को अन्दर पशुघर में बॉधे एवं पशुघर के खिड़की एवं दरवाजों को टाट–बोरी के परदे से या कडवी का टट्र बनाकर ढ़के।
- छोटे बछडे एवं बछियो का विथेष ध्यान रखकर ठंड से बचायें तथा 3 माह में एक बार कृमिनाशक दवा अवश्य पिलायें।
- मुर्गियों में रानीखेत बीमारी की रोकथाम हेतु 1 सप्ताह के चूजे को एफ0–2 वैक्सीन तथा 4 सप्ताह के चूजे को आर0–डी0 वैक्सीन अवश्यक लगायें।
- पशुओं को ठंड से बचाने के लिये पुवाल का बिछावन डालें।

मत्स्य

- बड़ी मछलियों की निकासी कर विक्रय करें साथ ही मछलियों के स्वास्थ का निरीक्षण भी करें।
- मछलियों पर लाल चकत्ते (एपीजोटिक अल्सरेटिव सिण्ड्रोम) दिखाई देने पर 1 किग्रा0 पोटेथियम परमैगनेट प्रति हे0 की दर से घोल बनाकर तालाब में छिड़काव करें एवं 15 दिन के पश्चात 50 कि0 ग्रा0 बुझा हुआ चूना प्रति हे0 की दर से घोल बनाकर तालाब में छिड़काव करें अथवा रोगग्रस्त तालाब में मत्स्य रोग की रोकथाम हेतु 1 लीटर प्रति हे0 की दर से सीफैक्स का घोल बनाकर तालाब में छिड़काव करें। कतला, रोहू एवं नैन मछलियों को पूरक आहार न दें।
- जिन तालाबों में मछलियों को रोग नहीं लगा है उनमें भी 50 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से बुझे हुए चूने का घोल बनाकर छिड़काव करें।
- कामन कार्प मछलियॉ माह फरवरी में प्रजनन करती है अतः हैचरी स्वामी कामन कार्प मछलियों को अलग तालाब मे रखकर मछलियों के भार का 1 प्रतिथत की दर से पूरक आहार प्रति दिन दें।
- मत्स्य पालक अपने जनपद में स्थापित मत्स्य पालक विकास अभिकरण के सम्पर्क में रहें।

वानिकी

- सिरस, खैर, आंवला, सागौन, बकैन, अकेथिया–आरक्यूलीफार्मिस व अमलतास के बीज आवथ्यकतानुसार निकटतम वनाधिकारी के सहयोग से प्राप्त करें।

क्राप वेदर वाच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 01 फरवरी, 2012 को प्रातः 11.00 बजे उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद के सभाकक्ष में आयोजित की जायेगी।

नोटः

- क्राप वेदर वाच ग्रुप की बैठकों की संस्तुतियॉ वेबसाईट www.upcaronline.org पर भी उपलब्ध है।
- आंचलिक मौसम केन्द्र, मौसम विभाग, अमौसी द्वारा मुफ्त टेलीफोन सेवा प्रारम्भ की गई है जिसका नम्बर 18001801717 है। अतः कृषक मौसम सम्बन्धी जानकारी इस फोन नम्बर पर प्राप्त करें।